+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(18 March 2025)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- 'महासागर' दृष्टिकोण: समुद्री शक्ति और वैश्विक दक्षिण पर भारत का नया दृष्टिकोण
- पानी की बूंदों से उत्पन्न 'माइक्रोलाइटनिंग' से पृथ्वी पर जीवन का जन्म हो सकता है
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत-न्यूजीलैंड संबंध
- MCQ

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

'महासागर' दृष्टिकोण: समुद्री शक्ति और वैश्विक दक्षिण पर भारत का नया दृष्टिकोण

चर्चा में क्यों है?

- भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मॉरीशस की दो दिवसीय यात्रा के दौरान वैश्विक दक्षिण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई, जहां 12 मार्च को उन्होंने 'महासागर' विजन की घोषणा की।
- इस यात्रा के दौरान भारत और मॉरीशस ने अपने संबंधों को 'बढ़ी हुई रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक बढ़ाया और समुद्री सुरक्षा सहित कई क्षेत्रों में संबंधों को बढ़ाने के लिए आठ समझौतों पर हस्ताक्षर किए।
- उल्लेखनीय है कि इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने ग्लोबल साउथ के लिए भारत के नए दृष्टिकोण की घोषणा की और इसे "महासागर" या "क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास के लिए पारस्परिक और समग्र उन्नति" नाम दिया। यह नीतिगत दृष्टिकोण हिंद महासागर में अपने प्रभाव का विस्तार करने के चीन के अथक प्रयासों की पृष्ठभूमि में आया है।

- यह घोषणा प्रधानमंत्री के 2015 के 'सागर (SAGAR) - क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास' के सूत्रीकरण पर आधारित है - जिसकी घोषणा मॉरीशस की उनकी पहली यात्रा के दौरान पोर्ट लुइस में भी की गई थी।

मॉरीशस की रणनीतिक अवस्थिति और भारत के साथ संबंध:

- उल्लेखनीय है कि दक्षिणी हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से स्थित मॉरीशस, मेडागास्कर, कोमोरोस, रीयूनियन, मालदीव और श्रीलंका के साथ मिलकर एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाता है, जहाँ भारत खुद को अग्रणी भागीदार के रूप में पेश करता है। पहले के समय में, मॉरीशस ने संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस के साथ अपने संबंधों का लाभ उठाया, लेकिन हिंद महासागर में इन शक्तियों के साथ भारत के बढ़ते रणनीतिक गठबंधन को देखते हुए, ऐसे प्रयास के सीमित लाभ हैं। सबसे महत्वपूर्ण विकल्प चीन है, एक ऐसा कार्ड जो प्रधानमंत्री रामगुलाम ने अपने पहले के कार्यकाल के दौरान खेला था।
- उल्लेखनीय है कि भारत स्वीकार करता है कि देश अपने विकास के लिए चीन के साथ आर्थिक संबंध बनाए रखने के लिए स्वतंत्र हैं। हालांकि, भारत को उम्मीद है कि इस तरह के जुड़ाव से भारतीय व्यवसायों के लिए समान अवसर सुनिश्चित होने चाहिए और रणनीतिक खतरे पैदा नहीं होने चाहिए।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत-मॉरीशस द्विपक्षीय संबंध:

- ध्यातव्य है मॉरीशस विकासशील दुनिया के सबसे सफल और समृद्ध लोकतंत्रों में से एक है और भारत का एक दृढ़ और विश्वसनीय भागीदार रहा है।
- 1968 में ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, मॉरीशस ने भारत के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित किए हैं, और मोदी ने इसे स्वीकार करते हुए कहा: "हमारे लिए, मॉरीशस परिवार है!"

SAGAR के तहत मॉरीशस को लाभ:

- हाल के वर्षों में, भारत ने इस द्वीप राष्ट्र को बहुमूल्य सहायता प्रदान की है।
- अप्रैल 2020 में, मॉरीशस के पास एक बड़े पैमाने पर तेल रिसाव ने स्थानीय पर्यावरण सुरक्षा को खतरे में डाल दिया था, और भारत ने पहले प्रतिक्रिया के रूप में तकनीकी उपकरण और कर्मियों को हवाई मार्ग से भेजा था।
- कोविड महामारी के दौरान, भारतीय नौसेना के जहाजों ने मॉरीशस में जीवन रक्षक टीके और दवाइयाँ पहुँचाईं।
- दिसंबर 2024 में, जब चक्रवात चिडो ने इस क्षेत्र को तबाह कर दिया, तो भारत ने मानवीय सहायता और आपदा राहत प्रदान करने में तत्परता दिखाई।

भारत का 'महासागर' दृष्टिकोण क्या है?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2015 में SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) सिद्धांत की घोषणा इस प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। अब प्रधानमंत्री मोदी ने मॉरीशस के साथ संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी में बदलने और 'सागर' को बढ़ाकर 'महासागर (Mutual and Holistic Advancement for Security and Growth Across Regions)' करने की घोषणा की है।
- प्रधानमंत्री मोदी के अनुसार यह नया दृष्टिकोण विकास के लिए व्यापार की भावना, सतत विकास के लिए क्षमता निर्माण और साझा भविष्य के लिए आपसी सुरक्षा पर केंद्रित होगा। इसके तहत प्रौद्योगिकी साझाकरण, रियायती ऋण और अनुदान के माध्यम से सहयोग सुनिश्चित किया जाएगा।

वैश्विक दक्षिण की आवाज बनना:

- उल्लेखनीय है कि महासागर दृष्टिकोण का उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को वैश्विक पटल पर लाना भी है। इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए, भारत एक बार फिर वैश्विक दक्षिण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन और संकेत दे रहा है।
- यह विज़न व्यापार और सतत विकास के लिए क्षमता निर्माण पर केंद्रित होगा। आपसी सुरक्षा से जुड़ी गतिविधियों पर ध्यान दिया जाएगा।

- और इसी भावना के साथ, भारत वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ प्रौद्योगिकी साझा करने और अनुदान सहायता सहित परियोजना-विशिष्ट रियायती वित्त का विस्तार करने का काम भी करेगा।

'महासागर' दृष्टिकोण मॉरीशस जैसे देशों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

- भारत के 'महासागर' दृष्टिकोण के लिए, मॉरीशस व्यापक वैश्विक दक्षिण के लिए एक बहुत ही प्रभावी पुल हो सकता है।
- अमेरिका द्वारा शुरू किए गए मौजूदा भू-राजनीतिक उथल-पुथल में, मध्यम और छोटी शक्तियां प्रमुख शक्तियों से सिद्ध क्षमता, विश्वसनीयता और दीर्घकालिक सहानुभूति की उम्मीद कर रही हैं।
- उल्लेखनीय है कि चीन को एक महत्वपूर्ण दाता के रूप में देखा जाता है, लेकिन जब पुनर्भुगतान की बात आती है तो वह लालची और अडिग होता है, और श्रीलंका और पाकिस्तान दोनों को चीन के साथ संतोषजनक अनुभव नहीं रहे हैं।
- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नेतृत्व में अमेरिका अब अधिक लेन-देन करने वाली शक्ति बन रहा है, और इसके सबसे गंभीर आलोचकों ने नए अमेरिका को एक जबरन वसूली करने वाली शक्ति करार दिया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- इसके विपरीत, बड़े हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत को अपेक्षाकृत अधिक सौम्य भागीदार के रूप में देखा जाता है, और समुद्री क्षेत्र कुछ ऐसे अवसर प्रदान करता है जिनका भारत दीर्घावधि में लाभ उठा सकता है। प्रधानमंत्री का समुद्री दृष्टिकोण - पहले सागर और अब महासागर - अभिनव और स्वागत योग्य नीतिगत पहल हैं, और उन्हें क्वाड के उद्देश्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करना होगा।

पानी की बूंदों से उत्पन्न 'माइक्रोलाइटनिंग' से पृथ्वी पर जीवन का जन्म हो सकता है:

चर्चा में क्यों है?

- पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत समुद्र में बिजली गिरने से नहीं हुई होगी, बल्कि झरनों और टूटती लहरों से निकलने वाली छोटी-छोटी बिजली की किरणों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी।
- स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के नए शोध से पता चलता है कि जब पानी की बूंदों को पृथ्वी के शुरुआती वायुमंडल में पाई जाने वाली गैसों के मिश्रण में छिड़का जाता है, तो वे कार्बनिक अणु बना सकती हैं। उनमें से एक 'यूरेसिल' है, जो DNA और RNA का एक प्रमुख घटक है।
- यह अध्ययन 'मिलर-उरे' परिकल्पना में सबूत और एक नया कोण जोड़ता है, जो तर्क देता है कि पृथ्वी पर जीवन बिजली गिरने से शुरू हुआ। वह सिद्धांत 1952 के एक प्रयोग पर आधारित है जिसमें दिखाया गया है कि पानी और अकार्बनिक गैसों के मिश्रण में बिजली के अनुप्रयोग से कार्बनिक यौगिक बन सकते हैं।

वर्तमान अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने पाया कि पानी का छिड़काव, जो छोटे विद्युत आवेश उत्पन्न करता है, वह काम अपने आप ही कर सकता है, इसके लिए अतिरिक्त बिजली की आवश्यकता नहीं होती है।

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति को लेकर 'मिलर-यूरे' परिकल्पना:

- पृथ्वी का निर्माण लगभग 4.6 अरब वर्ष पहले हुआ था। उसके बाद कुछ अरब वर्षों तक, इसमें रसायनों का समृद्ध मिश्रण था, लेकिन कार्बन-नाइट्रोजन बॉन्ड वाले लगभग कोई कार्बनिक अणु नहीं थे। ये बॉन्ड प्रोटीन, एंजाइम, न्यूक्लिक एसिड, क्लोरोफिल और अन्य यौगिकों के लिए महत्वपूर्ण हैं जो आज जीवित प्राणियों का निर्माण करते हैं।
- 1952 में, अमेरिकी रसायनज्ञ स्टेनली मिलर और भौतिक विज्ञानी हेरोल्ड यूरे ने एक प्रयोग में यह सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया कि जीवन के लिए आवश्यक कार्बनिक यौगिक (जैसे अमीनो एसिड) पानी और अकार्बनिक गैसों के मिश्रण में बिजली के अनुप्रयोग से बन सकते हैं। दोनों वैज्ञानिकों ने दिखाया कि एक तड़ित बिजली का झटका समुद्र से टकराया, जिससे मीथेन, अमोनिया और हाइड्रोजन जैसी गैसों के साथ रासायनिक संपर्क शुरू हुआ जिससे कार्बनिक अणु बने।

"माइक्रोलाइटनिंग" और कार्बनिक अणुओं का निर्माण:

- वर्तमान अध्ययन में वैज्ञानिकों ने पाया कि जब पानी की बूंदें विभाजित होती हैं, तो उनमें विपरीत आवेश विकसित होते हैं। बड़ी बूंदें सकारात्मक आवेश वाली होती हैं, जबकि छोटी बूंदें नकारात्मक हो जाती हैं। और जब ये विपरीत रूप से आवेशित बूंदें एक-दूसरे के करीब आती हैं, तो उनके बीच चिंगारी उड़ती है।
- शोधकर्ताओं के अनुसार "माइक्रोलाइटनिंग" नामक इस प्रक्रिया में बादलों में बिजली कैसे बनती है, इसकी नकल की जाती है। इस अध्ययन के सहलेखक और स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर रिचर्ड ज़ारे ने कहा कि "विपरीत रूप से आवेशित पानी की सूक्ष्म बूंदों के बीच माइक्रोइलेक्ट्रिक डिस्चार्ज मिलर-यूरे प्रयोग में पहले देखे गए सभी कार्बनिक अणुओं को बनाते हैं, और हम प्रस्ताव करते हैं कि यह अणुओं के प्रीबायोटिक संश्लेषण के लिए एक नया तंत्र है जो जीवन के निर्माण खंडों का गठन करते हैं"।

पृथ्वी पर शुरुआती जीवन के विकास में जल स्प्रे की भूमिका:

- उल्लेखनीय है कि अरबों वर्षों तक, पृथ्वी पर रसायनों का समृद्ध मिश्रण था, लेकिन कार्बन-नाइट्रोजन बंधों वाले कार्बनिक अणुओं की कमी थी। ये बंधन प्रोटीन, न्यूक्लिक एसिड और अन्य प्रमुख जैविक संरचनाओं के लिए आवश्यक हैं।

- मिलर-उरे प्रयोग ने सुझाव दिया कि समुद्र पर गिरने वाली बिजली से ये अणु बन सकते हैं। हालांकि, कुछ वैज्ञानिकों का तर्क है कि बिजली बहुत दुर्लभ थी और समुद्र इतना विशाल था कि यह मुख्य स्रोत नहीं हो सकता।
- अब ज़ारे और उनकी टीम अपने इस अध्ययन से एक अलग दृष्टिकोण पेश कर रही है। उनके प्रयोगों से पता चला कि माइक्रोलाइटनिंग प्रमुख कार्बनिक अणुओं का उत्पादन कर सकती है।
- उन्होंने नाइट्रोजन, मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड और अमोनिया युक्त गैस मिश्रण में कमरे के तापमान वाले पानी का छिड़काव किया। इसका परिणाम हाइड्रोजन साइनाइड, ग्लाइसिन और यूरैसिल सहित कार्बनिक यौगिकों का निर्माण था।
- अध्ययनकर्ताओं का मानना है कि बिजली गिरने की दुर्लभ घटनाओं के बजाय, माइक्रोलाइटनिंग अधिक लगातार और विश्वसनीय ऊर्जा स्रोत हो सकता है। चट्टानों से टकराने वाली लहरें, धुंध छिड़कने वाले झरने और अन्य प्राकृतिक प्रक्रियाएं छोटी-छोटी चिंगारियों की निरंतर आपूर्ति प्रदान करती होंगी, जिससे जीवन के लिए आवश्यक रासायनिक प्रतिक्रियाएं शुरू हो सकती हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

पानी की बूंदों की छुपी हुई शक्ति:

- शोधकर्ताओं की टीम ने पानी की बूंदों के अन्य आश्चर्यजनक गुणों का पता लगाया है। उनके शोध में यह अध्ययन शामिल है कि कैसे जल वाष्प अमोनिया का उत्पादन करने में मदद कर सकता है, जो उर्वरक में एक प्रमुख घटक है, और कैसे छोटी पानी की बूंदें अपने आप हाइड्रोजन पेरोक्साइड उत्पन्न कर सकती हैं।
- यह नया शोध तड़ित बिजली के झटके से ध्यान हटाकर पानी की बूंदों के शांत लेकिन शक्तिशाली रसायन विज्ञान पर केंद्रित करता है। निष्कर्ष यह समझने की नई संभावनाएं खोलते हैं कि जीवन कैसे शुरू हुआ - एक ही झटके से नहीं, बल्कि अनगिनत छोटी चिंगारियों से।

छोटी-छोटी अनगिनत चिंगारियों से जीवन की संभावना:

- कार्बनिक अणुओं के संभावित स्रोत के रूप में माइक्रोलाइटनिंग की खोज विज्ञान के सबसे बड़े रहस्यों में से एक पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह सुझाव देता है कि दुर्लभ और नाटकीय घटनाओं पर निर्भर रहने के बजाय, जीवन छोटी लेकिन निरंतर प्रक्रियाओं से उभरा हो सकता है।
- एक एकल, असाधारण क्षण के बजाय, जीवन समय के साथ होने वाली अनगिनत छोटी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से उभरा हो सकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- यह विचार न केवल पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत के बारे में हमारी समझ को गहरा करता है, बल्कि हमारे ग्रह से परे जीवन की खोज का भी विस्तार करता है। यदि पानी की बूंदों में छोटी चिंगारी यहाँ कार्बनिक अणु बना सकती है, तो तरल पानी वाले दूर के ग्रह पर भी ऐसी ही प्रक्रियाएँ हो सकती हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत-न्यूजीलैंड संबंध:

परिचय:

- न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर 16-20 मार्च तक भारत की यात्रा पर हैं। यह यात्रा दोनों हिंद-प्रशांत लोकतंत्रों के बीच विकसित हो रहे द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण क्षण है। ऐतिहासिक रूप से कम महत्व दिए जाने वाले भारत-न्यूजीलैंड संबंध अब अर्थशास्त्र और व्यापार, प्रवासी, शिक्षा और सबसे महत्वपूर्ण रूप से रणनीतिक मोर्चे पर रणनीतिक और कूटनीतिक महत्व प्राप्त कर रहे हैं।
- 17 मार्च को होने वाले रायसीना डायलॉग में मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानमंत्री लक्सन की भूमिका भारत के साथ अपने रणनीतिक जुड़ाव को बढ़ाने के लिए न्यूजीलैंड के इरादे को दर्शाता है। प्रधानमंत्री लक्सन के साथ व्यापार और शिक्षा जगत से लेकर मीडिया और प्रवासी हस्तियों का एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी है, जो दर्शाता है कि उन्होंने अपने भारत दौरे को कितना महत्व दिया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

इंडो-पैसिफिक में चीन का बढ़ता प्रभाव:

- इस साझेदारी का एक प्रमुख चालक इंडो-पैसिफिक में चीन की बढ़ती मुखरता है। न्यूजीलैंड को अपने निकटतम पड़ोस में चीन के बढ़ते सामरिक पदचिह्नों की व्याख्या करने और उनका जवाब देने में एक महत्वपूर्ण विदेश नीति चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।
- इसका एक हालिया उदाहरण चीन द्वारा कुक आइलैंड्स के साथ एक व्यापक सुरक्षा साझेदारी पर हस्ताक्षर करना है, जो न्यूजीलैंड के साथ स्वतंत्र सहयोग वाला क्षेत्र है। उसके साथ ही चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (PLAN) द्वारा हाल ही में तस्मान सागर के पास "बेहद सक्षम" हथियारों से लैस अघोषित लाइव-फायर अभ्यास ने वेलिंगटन के लिए अपनी क्षेत्रीय रणनीति को फिर से जांचने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया।
- चीन के रणनीतिक इरादों को लेकर भारत भी उतनी ही चिंतित है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में उसके निवेश की गोपनीयता और अपने नजदीकी क्षेत्रों से परे उसकी मुखर और विस्तारित सैन्य उपस्थिति चिंता का विषय है।
- इन परिस्थितियों में न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। क्योंकि भारत, एक प्रमुख इंडो-पैसिफिक खिलाड़ी और एक प्रमुख क्वाड सदस्य के रूप में, चीन की मुखरता के प्रतिकार के रूप में देखा जा रहा है।

एक स्वतंत्र, खुले और सुरक्षित हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन:

- भारत और न्यूजीलैंड दोनों एक स्वतंत्र, खुले और सुरक्षित हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करते हैं। दोनों देश विकास की नीति में विश्वास करते हैं, विस्तारवाद में नहीं।
- संयुक्त बयान के अनुसार, दोनों नेताओं ने माना कि दोनों देश एक अनिश्चित और खतरनाक दुनिया का सामना कर रहे हैं। वहीं समुद्री राष्ट्रों के रूप में, भारत और न्यूजीलैंड का खुले, समावेशी, स्थिर और समृद्ध हिंद-प्रशांत में मजबूत और साझा हित है, जहां नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था कायम है।

पारस्परिक रूप से लाभकारी मुक्त व्यापार समझौते की संभावना:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत और न्यूजीलैंड द्वारा पारस्परिक रूप से लाभकारी मुक्त व्यापार समझौते के लिए बातचीत शुरू करने के निर्णय का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा, "इससे आपसी व्यापार और निवेश की संभावना बढ़ेगी। डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण और फार्मा जैसे क्षेत्रों में आपसी सहयोग और निवेश को बढ़ावा मिलेगा"।
- द्विपक्षीय सहयोग में जारी मजबूत गति को प्रतिबिंबित करते हुए, अधिकाधिक दोतरफा निवेश का आह्वान करते हुए, उन्होंने भारत और न्यूजीलैंड के बीच

व्यापार और निवेश संबंधों को बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की, ताकि इसकी अप्रयुक्त क्षमता का उपयोग किया जा सके और समावेशी तथा सतत आर्थिक विकास में योगदान दिया जा सके।

- उल्लेखनीय है कि न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री की यात्रा का एक मुख्य फोकस क्षेत्र संभावित मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर हस्ताक्षर करना है, जो द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से बदल सकता है। वर्तमान में, भारत-न्यूजीलैंड व्यापार 2.83 बिलियन अमेरिकी डॉलर पर मामूली है, जो पर्याप्त अप्रयुक्त क्षमता को उजागर करता है। न्यूजीलैंड, भारत को अपने आर्थिक और व्यापारिक संबंधों में विविधता लाने के लिए एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में देखता है।
- वहीं भारत की उभरती हुई व्यापार स्थिति आशावाद प्रदान करती है। ऑस्ट्रेलिया (2023), यूएई (2022) और मॉरीशस (2021) के साथ हाल ही में किए गए एफटीए रणनीतिक हितों के संरेखित होने पर व्यापक आर्थिक समझौतों में शामिल होने की भारत की इच्छा को प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा, भारत यूनाइटेड किंगडम, यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ एफटीए को अंतिम रूप देने पर काम कर रहा है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

न्यूजीलैंड में भारत विरोधी गतिविधियों को लेकर चिंता:

- उल्लेखनीय है कि दोनों नेताओं ने सुरक्षा सहयोग पर भी चर्चा की। आतंकवादी हमलों के दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जरूरत को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि "हम आतंकवादी, अलगाववादी और कट्टरपंथी तत्वों के खिलाफ मिलकर सहयोग करना जारी रखेंगे। इस संदर्भ में, हमने न्यूजीलैंड में कुछ अवैध तत्वों द्वारा भारत विरोधी गतिविधियों के बारे में अपनी चिंता साझा की"।

MCQs

1. चर्चा में रहे 'सागर (SAGAR)' दृष्टिकोण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

   1. प्रधानमंत्री द्वारा इस दृष्टिकोण को मार्च 2015 में मॉरीशस में प्रतिपादित किया था।
   2. इसके अनुसार, भारत अपने समुद्री पड़ोसियों के साथ आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को गहरा करना चाहता है।

   उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

   Ans:(c)

2. चर्चा में रहे 'भारत-मॉरीशस द्विपक्षीय संबंध' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

   (a) 1968 में ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, मॉरीशस के साथ भारत के घनिष्ठ संबंध है।

(b) भारत के 'सागर' और 'महासागर' दृष्टिकोणों का मॉरीशस प्रमुख स्तंभ है।

(c) हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव से यह संबंध और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं।

Ans:(d)

3. चर्चा में रहे 'माइक्रोलाइटनिंग से पृथ्वी पर जीवन का जन्म के प्रदर्शन से जुड़े अध्ययन' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. इस नए शोध के अनुसार जब पानी की बूंदों को पृथ्वी के शुरुआती वायुमंडल में पाई जाने वाली गैसों के मिश्रण में छिड़का जाता है, तो वे कार्बनिक अणु बना सकती हैं।
2. यह अध्ययन 'मिलर-उरे' परिकल्पना को पूरी तरह ख़ारिज कर दिया है, जो तर्क देता है कि पृथ्वी पर जीवन बिजली गिरने से शुरू हुआ।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans:(a)

4. निम्नलिखित देशों में से किसके साथ भारत द्वारा मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर **नहीं** किये गए है?

(a)ऑस्ट्रेलिया

(b) न्यूजीलैंड

(c) संयुक्त अरब अमीरात

(d) मॉरीशस

Ans:(b)

5. चर्चा में रहे 'मिलर-यूरे परिकल्पना' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. इसके तहत एक प्रयोग में यह सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया कि जीवन के लिए आवश्यक कार्बनिक यौगिक पानी और अकार्बनिक गैसों के मिश्रण में बिजली के अनुप्रयोग से बन सकते हैं।
2. इसके अनुसार एक तड़ित बिजली का झटका समुद्र से टकराया, जिससे विभिन्न जैसी अकार्बनिक गैसों के साथ रासायनिक संपर्क शुरू हुआ जिससे कार्बनिक अणु बने।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans:(c)